लॉक का जन्मजात प्रत्यय का खण्डन (प्रथम भाग)

Refutation of Innate Idea of Locke (First Part)

⟹ लॉक के अनुसार अनुभव ही सत्य ज्ञान का आधार है, विवेक नहीं। जब कोई भी वस्तु हमारे समक्ष उपस्थित होती है तो हमारी इन्द्रियाँ उन्हें संवेदना के रूप में ग्रहण करती है और ये संवेदनाएं हमारे मन पर उनका प्रत्यय अंकित कर देती है जिससे हमें उस वस्तु का ज्ञान होता है। अतः स्पष्ट है कि लॉक के अनुसार प्रत्यय अर्जित है, जन्मजात नहीं। इसलिए लॉक ने जन्मजात प्रत्यय का खण्डन किया है।

वर्तमान संदर्भ में जन्मजात प्रत्यय के अर्थ का पुनः संकेत कर देना अपेक्षित होगा। बुद्धिवादियों के अनुसार जन्मजात प्रत्यय से अर्थ उन प्रत्ययों से है जिसे व्यक्ति जन्म से ही अपने अन्दर अन्तर्भूत पाता है। जिस प्रकार व्यक्ति जन्म से ही अपने शरीर के विभिन्न अंगों को अथवा इन्द्रियों को प्राप्त करता है ठीक

उसी प्रकार जन्मजात प्रत्ययों को भी वह अपनी बुद्धि में जन्म से ही धारण किये रहता है, अनुभूतियों का इसमें कोई योगदान नहीं होता। बुद्धिवादियों ने बताया है कि ये जन्मजात प्रत्यय जिन्हें व्यक्ति जन्म से ही प्राप्त करता है। पूर्णतः स्पष्ट (Clear), सार्वभौम (Universal) और निश्चित (necessary) होते हैं। पर यदि यह पूछा जाय कि इस प्रकार के प्रत्यय कौन से हैं, तो इसका कोई एक निश्चित उत्तर नहीं दिया जा सकता क्योंकि बुद्धिवादियों ने जन्मजात प्रत्ययों की कोई सूची नहीं दी यद्यपि उनका मत है कि तर्कशास्त्र, गणित, धर्म, नैतिकता, आत्मा, आत्मा की अमरता एवं ईश्वर सम्बन्धी प्रत्यय जन्मजात होते हैं क्योंकि इनकी रचना ईश्वर द्वारा हुई है।

अब प्रश्न यह है कि क्या इस प्रकार के जन्मजात प्रत्ययों की सत्यता स्वीकार की जा सकती है? लॉक का उत्तर निषेधात्मक है। उनका कहना है कि यदि जन्मजात प्रत्यय का अर्थ प्रत्ययों का सार्वभौम और निश्चित होना है जैसा की बुद्धिवादियों का कथन है कि कोई भी प्रत्यय ऐसा नहीं जिसे जन्मजात नहीं कहा जाय क्योंकि किसी भी प्रत्यय को सार्वभौम और निश्चित सिद्ध नहीं किया जा सकता है। मानवीय मन में किसी भी ऐसे प्रत्यय का कोई अस्तित्व नहीं जिसे आवश्यक रूप में हर एक व्यक्ति

में निहित कहा जा सके। अतः जन्मजात प्रत्यय की सम्बन्धी विचार मान्य नहीं है। पर यहाँ यह याद रखना आवश्यक है कि लॉक जन्मजात प्रत्यय की सत्यता भले ही नहीं मानते हो पर वे जन्मजात स्वाभाविक शक्ति को स्वीकार करते है।

लॉक ने जन्मजात प्रत्यय का खण्डन दो रूपों में किया है। सबसे पहले वे अपने तर्कों से ये प्रमाणित करते हैं कि कोई भी प्रत्यय ऐसा नहीं जिसे सार्वभौम और निश्चित कहा जाय और इसलिए जन्मजात प्रत्ययों की सत्यता नहीं मानी जा सकती। फिर दूसरी ओर वे यह सिद्ध करते है कि यदि किसी प्रत्यय को सार्वभौम और निश्चित मान भी लिया जाय तब भी उनमें एवं अर्जित प्रत्ययों में कोई भेद नहीं और इसलिए मात्र किसी प्रत्यय के अनिवार्य और सार्वभौम होने के कारण उसे जन्मजात नहीं कहा जा सकता।

जहाँ तक तर्कशास्त्र एवं गणित सम्बन्धी प्रत्ययों का प्रश्न है लॉक ने कहीं कहा है कि ये ऐसे प्रत्यय है जिन्हें समान रूप से सभी व्यक्तियों में नहीं पाते अर्थात ये सार्वभौम नहीं है। उदाहरण के लिए बच्चों, पागलों एवं अशिक्षित लोगों में तर्कशास्त्र का ज्ञान नहीं होता और न ही वे गणित के नियमों से परिचित होते है। यदि मन और

चेतना का अर्थ समान माना जाय और प्रत्ययों को जन्मजात तो इन प्रत्ययों को सबों में वर्तमान होना चाहिए। पर हम ऐसा नहीं पाते। गणित सम्बन्धी प्रत्ययों को भी जन्मजात नहीं कहा जा सकता है क्योंकि हर व्यक्ति को गणित के नियमों का प्रत्यय नहीं होता। क्या हम यह कह सकते हैं कि अशिक्षित व्यक्ति को यह ज्ञान है कि त्रिभुज के तीनों कोणों का योग दो समकोण के बराबर होता है स्पष्ट है कि इसे सत्य नहीं माना जा सकता अर्थात सबों में गणित के नियमों का प्रत्यय निहित नहीं। अतः तर्कशास्त्र और गणित सम्बन्धी प्रत्यय जन्मजात नहीं कहे जा सकते।

तर्कशास्त्र की तरह ही तात्विक प्रत्यय भी सार्वभौम नहीं कहे जा सकते। जन्मजात प्रत्यय के समर्थकों का यह दावा है कि आत्मा, आत्मा की अमरता और ईश्वर सम्बन्धी प्रत्यय जन्मजात होते हैं। पर यहाँ यह पूछा जा सकता है कि क्या बच्चों पागल और अशिक्षित व्यक्तियों को इस बात का ज्ञान है कि अमरता क्या है? निःसन्देह इन लोगों में आत्मा या ईश्वर सम्बन्धी कोई भी प्रत्यय नहीं होता। जहाँ तक ईश्वरीय सत्ता का प्रश्न है, इससे ~~सम्बन्धित~~ सम्बन्धित प्रत्यय भी सार्वभौम नहीं कहे जा सकते। अनेक दार्शनिक सिद्धान्तों में ईश्वरीय अस्तित्व को ही अस्वीकार किया गया है। ह्यूम

ईश्वरीय सत्ता को नहीं मानते। यदि ईश्वरीय अस्तित्व का प्रत्यय जन्मजात माना जाय तो फिर अनिश्वरवाद का कोई अर्थ नहीं रह जाता। इतना ही नहीं जो लोग ईश्वरीय सत्ता को मानते भी हैं अर्थात जिनमें ईश्वर का प्रत्यय है वे भी ईश्वरीय स्वरूप, संख्या इत्यादि प्रश्नों पर एक मत नहीं।

जन्मजात प्रत्यय के समर्थकों के अनुसार तादात्म नियम (Law of Identity), अन्तर्विरोध नियम (Law of Contradiction), कारणता नियम (Law of Causation) तथा प्रकृति समरूपता नियम (Law of Uniformity of Nature) सम्बन्धी प्रत्यय व्यक्ति में जन्मजात होते हैं क्योंकि ये ऐसे नियम हैं जो पूर्णतः निश्चित और सार्वभौम हैं, जिन पर प्रत्येक व्यक्ति पूर्ण विश्वास करता है। पर लॉक का कहना है कि क्या इन नियमों से सम्बन्धित प्रत्ययों को जन्मजात माना जा सकता है? एक बच्चा नित्य ही सुबह सूर्य को उगते और शाम को अस्त होते देखता है और अपने इस नित्य के अनुभव के आधार पर यह कह सकता है कि अगली सुबह फिर सूर्य उदय होगा। पर क्या उनका यह कथन इस बात का प्रमाण कहा जायगा कि बच्चे में प्रकृति समरूपता नियम और कारणता नियम का प्रत्यय जन्मजात है? लॉक के अनुसार सत्य तो यह है कि उनके इस कथन

का मूल आधार उनकी व्यक्तिगत अकाट्य अनुभूतियाँ है न कि उसके अन्दर जन्मजात प्रत्ययों का निहित होना। सारांश यह है कि बुद्धिवादियों का यह दावा कि प्रत्यय जन्मजात होते है, पूर्णतः निराधार और अमान्य है।

जहाँ तक नैतिक नियमों का प्रश्न है वे किसी भी रूप में जन्मजात नहीं माने जा सकते। इसका कारण यह है कि कोई भी नैतिक नियम संसार में कभी भी सर्वमान्य नहीं होता। नैतिक नियमों अथवा मान्यताओं के स्वरूप सदा ही समय, स्थान और परिस्थिति के अनुकूल बदलते रहते है। कोई भी नैतिक नियम यदि एक विशेष समय या परिस्थिति मे स्वीकार किया जाता है तो समय और परिस्थिति के बदलने पर उसे अनुचित कह कर अस्वीकार कर दिया जाता है।

शेष अगले भाग में

Dr. Md. Arshad Ali
Deptt. of Philosophy
Jagjiwan College
V.K.S.U, Ara.